प्रकाशक—
श्रीचन्द्रशेखर शास्त्री
ओझाबन्धु-आश्रम
इलाहाबाद

पहिली बार १०००

मुद्रक—
काव्यतीर्थ पं० विश्वम्भरनाथ बाजपेयी
ओङ्कार प्रेस, इलाहाबाद

स्मृति-चिन्ह

बची हुई हैं स्मृति की ये कलियाँ पर लो इनको स्वीकार ।
ठुकराना मत इन्हें जानकर मेरा छोटा-सा उपहार ॥

मुकुल



श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

परिचय

इन कविताओं की लेखिका, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म संवत् १९६१ वि० में, नागपञ्चमी के दिन, प्रयाग के निहालपुर मुहल्ले में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। वे जाति के बैस क्षत्रिय थे। सुभद्रा कुमारी अपने माता-पिता की आठवीं सन्तान हैं। इनके अतिरिक्त, इनके दो बड़े भाई और तीन बहनें हैं। उनमें केवल एक बहन इनसे छोटी है। दो भाई और एक बहिन का देहान्त हो चुका है।

सुभद्रा कुमारी के पिता बड़े उदार विचारों वाले और प्रतिष्ठित पुरुष थे। इन्हें स्वभाव से ही कविता और साहित्य से विशेष प्रेम था। उनकी इस सुरुचि का बालिका सुभद्रा पर भी बहुत प्रभाव पड़ा। बचपन से ही इन्हें प्राकृतिक दृश्यों को देखने, सृष्टि के सौन्दर्य पर विचार करने और तितलियों तथा फूलों के पीछे दौड़ने-फिरने का व्यसन-सा हो गया था। पढ़ने-लिखने का शौक भी इन्हें छोटी उमर से ही था। एकान्त इन्हें अधिक पसन्द था। प्रायः लोग इन्हें घर में कहीं अकेले गुनगुनाते हुए या चुपचाप आकाश की ओर ताकते हुए देखा करते थे। इनके कवि-जीवन का भविष्य इन्हीं बातों में छिपा हुआ था।

बचपन में सुभद्रा कुमारी ज़िद्दी और निडर स्वभाव की थीं। लेकिन इनकी ज़िद, और लोगों की तरह, सच्ची-झूठी बातों के लिए नहीं हुआ करती थी, बल्कि सत्य और न्याय के लिए होती थी। सत्याग्रह की प्रवृत्ति भी इनमें उसी समय से है। घर की छोटी-मोटी बातों में भी, कभी ये अन्याय-अत्याचार बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं और न्याय के लिए अड़ जाती थीं।

कविता का बीज इनके अन्दर बाल्यकाल से ही निहित था—ये बहुत ही भावुक, कल्पना-प्रवण और सरल हैं। बचपन में घर के लोग इनके ज़िद करने पर "गोगा आया-गोगा आया" कहकर इन्हें डराया करते थे। इसके साथ ही, ये बात-बात में सब जगह ईश्वर का भी नाम सुनती थीं। इनके मन में बार-बार यह बात उठती थी कि गोगा ईश्वर की तरह कोई चीज़ है, जो दिखलाई नहीं देता। इसीसे एक बार इन्होंने ईश्वर के लिए कहा था—

तुम बिन व्याकुल हैं सब लोगा।
तुम तो हो इस देश के गोगा॥

इनका बचपन ऐसी ही मधुर और सरल घटनाओं से भरा हुआ है। जब ये नौ बरस की हुईं तो प्रयाग के क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल में इनका नाम लिखा दिया गया और

मन से इनकी शिक्षा होने लगी। उसी समय से इन्होंने कविताएँ लिखना भी प्रारम्भ कर दिया। स्कूल के जलसों में सदा ही ये कविताएँ पढ़ा करती थीं, जिनमें इनके भविष्य की प्रतिभा का आभास मिलता था।

इनकी शिक्षिकाएँ इनसे बड़ा स्नेह करती थीं—ये सदा ही स्नेह की छत्र-छाया में रहीं और इसीसे इनका जीवन स्नेह के आलोक से आलोकित हो उठा है। इनकी सहपाठिनियाँ भी इनसे बहुत हिली-मिली रहती थीं और सदा ही इनसे कुछ सीखने की चेष्टा किया करती थीं। अपने प्रिय-भाषण, नम्रता, मिलनसारी और मधुर स्वभाव के कारण इन्होंने सभी को अपने वश में कर लिया था।

अपने प्यारे देश के प्रति इनके मन में अगाध प्रेम है। इनकी सभी कविताएँ देश-प्रेम की मदिरा से सराबोर हैं। देश के सम्मुख संसार की सभी विभूतियों और प्रलोभनों को ये तुच्छ समझतीं और अवसर मिलने पर ठुकराती रही हैं।

धीरे-धीरे इनकी कविताएँ स्कूल की सीमा पार करके पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठों पर दीख पड़ने लगीं और उसी समय हिन्दी-संसार ने इनकी कविताओं के रूप में इनके व्यक्तित्व का दर्शन किया। थोड़े ही दिनों में इनकी

कविताओं की धूम मच गयी और वे जनता में बड़े चाव से पढ़ी जाने लगीं।

प्राय:सोलह वर्ष की अवस्था में—संवत् १९७६ वि० में—इनका विवाह खण्डवा (मध्यप्रदेश) निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह जी चौहान बी. ए., एल. एल. बी. से हुआ। इस समय भी ये क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल में पढ़ ही रही थीं। विवाह के वाद, अपने पति की इच्छानुसार, ये बनारस के थियासोफ़िकल स्कूल में पढ़ने के लिए चली गयीं। किन्तु, वहाँ के वायुमण्डल में ये अधिक समय तक रह न सकीं। ये हिन्दी-अँगरेज़ी के कुछ राष्ट्रीय दैनिक पत्र पढ़ने के लिए मँगाया करती थीं। स्कूल के अधिकारियों ने यह पसन्द नहीं किया। अपनी उचित और आवश्यक स्वतन्त्रता में वाधा पड़ती देख, तत्काल ही ये स्कूल छोड़कर प्रयाग चली आयीं और फिर क्रास्थवेट स्कूल में पढ़ने लगीं।

जिस साल ये हाई स्कूल की नवीं श्रेणी की परीक्षा देनेवाली थीं, उसी साल सावरमती के तपस्वी ने स्वाधीनता-संग्राम का बिगुल वजाया और तव स्कूल छोड़कर राष्ट्रीय झण्डे के नीचे जा खड़ी होनेवाली ये पहिली महिला थीं। उसी वर्ष इनके पति ने वकालत की परीक्षा पास की थी, लेकिन इनके अनुरोध से उन्होंने भी वकालत न करने का

निश्चय किया। उसके बाद तो इस आदर्श दम्पति ने देश-सेवा को ही अपने जीवन का व्रत बना लिया।

नागपुर के झण्डा-सत्याग्रह के समय ये दो बार गिरफ़ार हुईं और कई दिनों तक जेल में रक्खी जाने के बाद छोड़ दी गयीं। उसी समय महात्मा गाँधी के साथ साबरमती में भी कुछ समय तक रहने का इन्हें अवकाश मिला था।

सुभद्रा कुमारी की एक कन्या और दो पुत्र सन्तान हैं। कन्या का नाम सुधा और पुत्रों का जयसिंह और अजय-सिंह है। क्रम से उनकी अवस्था सात वर्ष, ढाई वर्ष और एक वर्ष की है। बच्चे सभी स्वस्थ-सुन्दर और होन-हार हैं। उनके भविष्य के सम्बन्ध में सुभद्रा कुमारी की बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। ईश्वर करें, इनकी सारी कामनाएँ सफल हों और इनके पुत्र-पुत्री योग्य माता-पिता की योग्य सन्तान बन कर उनके यश और गौरव की वृद्धि कर सकें।

सुभद्रा कुमारी का स्वभाव भावुक, बच्चों की तरह सरल और मिलनसार है। ये अत्यन्त हँसमुख और सबको समान दृष्टि से देखने-वाली हैं। सदैव प्रसन्न रहती और अपने व्यवहार से सबको प्रसन्न रखती हैं। एक बार जो इनसे मिलता है, इनसे बातचीत करता है, वह इनकी सरलता, मिलनसारी और सादगी का क़ायल हो जाता है।

अपने दुश्मनों से भी कठोर व्यवहार करना ये पसन्द नहीं करतीं, इसीसे इनका दुश्मन कोई है ही नहीं।

इनकी रहन-सहन सादी और जीवन बिलकुल सरल है। आडम्बर और दिखावट से इन्हें विशेष चिढ़ है। अभिमान इन्हें छू भी नहीं गया। स्वयं जैसी सरल और उदार हैं, दूसरों को भी ठीक वैसा ही समझती हैं।

सुभद्रा कुमारी आदर्श नारी हैं। हमने सुख-दुख में समान रूप से प्रसन्न रहते हुए इन्हें देखा है।

ये किसी के कहने से या किसी समस्या पर कविताएँ नहीं लिख सकतीं। इनकी कविता की भाषा, इनका हृदय है। यही कारण है कि इनकी कविताएँ बहुत मार्मिक, चुटीली और सरल होती हैं। इनकी कविताओं में पाण्डित्य और शब्दाडम्बर नहीं होता, हृदय से निकली हुई सीधी कविता होती है, जो हृदय के तारों से टकराकर झनझना उठती है। पाठक इस पुस्तक की कविताओं में पग-पग पर इस सत्य का अनुभव कर सकेंगे।

ईश्वर सुभद्रा जी को चिरायु करे!

ओझाबन्धु आश्रम,
इलाहाबाद

श्रीप्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'

मुकुल के नाम से अपनी कविताओं का संग्रह हिन्दी-संसार के सामने रखने में मुझे सङ्कोच से अधिक जो प्रसन्नता हो रही है, उसका एक कारण है। ये सभी कविताएँ मेरे जीवन के उषःकाल में लिखी गयी थीं। आज तो उन दिनों की याद करना भी अपराध है; आज वे दिन अतीत के अन्धकार में खो गये हैं—जैसे सपना हो गये हों! मैं किसी से क्या कहूँ कि वे दिन कैसे थे?

आज संसार के संघर्षों से ऊबकर मेरे कवि-हृदय ने विश्राम ले लिया है। जब कभी कविता का नाम सुनती हूँ, मालूम होता है जैसे दूर से आने वाली कोई टूटती हुई रागिनी सुन रही हूँ, जैसे कोई भूली हुई बात याद कर रही हूँ। अनेक बार उमड़े उर की लहरों की तरह

मन में उठती हैं और न-जाने किस अज्ञात तट से टकराकर शून्य में विलीन हो जाती हैं। मैं सोचा करती हूँ, क्या कभी फिर भी मैं कविता लिख सकूँगी ? लेकिन, इस प्रश्न का उत्तर कहाँ मुझे मिलता है !

फिर, एकबार सोचती हूँ, जो स्मृतियाँ अतीत के अन्धकार में छिप गयी थीं, जिन्हें मैं भी भूल-सी ही गयी थी, हृदय की उन चिनगारियों को स्मृति की फूँक मार कर जगाने में कौन सुख है ? यह इतना आयोजन, इतना आडम्बर जो किया जा रहा है, इसका क्या अभिप्राय है ? मुझे तो इसका भी कोई समुचित उत्तर नहीं मिलता।

मैंने कभी यह इच्छा प्रकट नहीं की कि मेरी कविताएँ इकट्ठी की जायँ और उनकी पुस्तक तैयार हो। यह बात तो कभी मैंने सोची भी नहीं थी कि कभी कोई इन्हें यह रूप देगा और न यह समझ कर मैंने कोई कविता ही कभी लिखी है। किन्तु, अनेक बार जो बात सोची-समझी नहीं जाती, वही सामने आती है। इन कविताओं के सम्बन्ध में भी यही हुआ। मेरे भाई प्रफुल्ल के आग्रह, अनुरोध और परिश्रम से आज मेरी कविताएँ, पुस्तक-रूप में, साहित्य-पारखियों के सामने जा रही हैं।

इन कविताओं को यह रूप देने के लिए मैंने कुछ भी

नहीं किया। मेरे पास अपनी कविताओं का न तो कोई संग्रह था और न मुझे ठीक-ठीक यही याद था कि मेरी कौन कविता कब, कहाँ छपी है। मेरी कविताओं के प्रति प्रफुल्ल का जो अकपट स्नेह है, यह संग्रह उसी का परिणाम है। प्रफुल्ल ने ही, न जाने कहाँ-कहाँ से, इतनी कविताएँ इकट्ठी की हैं, इनका क्रम लगाया है; और इन्हें हर तरह से सजाने का आयोजन किया है। मैं तो केवल अपने उस भाई के इस कार्य को स्नेहभरी आँखों से देखती-भर रही हूँ।

आज, जब यह पुस्तक साहित्य के बाजार में जाने के लिए तैयार है, मुझे कुछ भय-सा हो रहा है। लेकिन, फिर सोचती हूँ, मुझे भय किस बात का? कविताएँ अच्छी हों या बुरी, मेरी हैं और मुझे प्यारी भी बहुत हैं। मैं इनके बारे में कुछ कहना नहीं चाहती। चाहूँ भी तो कुछ कह नहीं सकती। और इसीलिए, मौन रह कर ही, प्रसन्नता पूर्वक, यह पुस्तक जनता के हाथों में देती हूँ।

३६, राइट टाउन, जबलपुर
१ नवम्बर ३०

—सुभद्रा कुमारी

सिंहावलोकन

चेस्टरटन महाशय ने हार्डी की आलोचना करते हुए कहा था कि कला का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह हमें वस्तुओं की वास्तविक स्थिति का ज्ञान करा दे। वस्तुओं की सत्यता का दिग्दर्शन कराना ही कला का ध्येय हो।

चेस्टरटन महाशय के व्यक्तिगत विचारों ने ही कदाचित् उन्हें ऐसा कहने के लिए बाध्य किया हो। वास्तव में कला का आदर्श सत्य से कुछ भिन्न है। यद्यपि आजकल के आलोचक सत्यं, शिवं, सुन्दरम् को ही कला की परिभाषा मानते हैं, पर वे यदि वस्तुओं के अन्तरतम स्थान में पहुँचने का कष्ट उठावें तो उन्हें अपनी परिभाषा परिष्कृत

करनी पड़ेगी। मैं तो कला का अस्तित्व वहीं तक मानता हूँ, जहाँ तक वह किसी कलाकार के हृदयस्थ किसी भाव-विशेष से सम्पर्क रखती है। और जब वह भाव-विशेष प्रकाश में आता है तो निष्पक्ष एवं स्पष्ट रूप से। हम कलाकार से प्रत्येक स्थिति में वह निष्पक्ष भाव माँग सकते हैं, सत्य नहीं। उसका एक कारण है। हम नहीं कह सकते कि वास्तविक सत्य का अस्तित्व और उसकी अन्तिम सीमा कहाँ है! जिसे हम आज सत्य का पूर्ण प्रमाण मानते हैं, सम्भव है, कल वही बालकों की क्रीड़ा का सामान मान लिया जाय। इसलिए कला को मैं वह विशद चित्र मानता हूँ, जिसमें कलाकार के हृदय की परिस्थिति स्पष्ट रूप से अंकित रहती है। जब कलाकार प्रेमी का रूप रखता है तो उसके सामने समुद्र उसकी मुस्कान के साथ मुसकराता है; वायु उसकी प्रेमिका का नाम उसके कानों में कह जाती है; तारे उसे सौंदर्य की आँखों से देखते हैं। वहीं कलाकार जब वियोगी बनकर दुखी होता है तो वही समुद्र उसे उदास और निर्दय मालूम होता है: वही वायु उसके उच्छ्वासों की हँसी उड़ाती है: और वही तारे उसको और समवेदना-रहित शून्य नेत्रों से देखते हैं। दोनों ही परिस्थितियाँ कला-रूप की पूर्ण परिचायिका हैं: दोनों ही में कला

का अस्तित्व है पर उनकी सत्यता में कितना अन्तर है—कितना भेद है ! यही कारण है कि कला में सत्य का उतना महत्व नहीं है, जितना परिस्थिति का। किसी कवि के हृदय में परिस्थिति की ही प्रधानता अधिक रहती है, सत्य की नहीं। हाँ, पहिले उस कवि को पूर्ण कलाकार होना चाहिए।

परिस्थितियों की हिलोर में कवि की कविता इस प्रकार चलती है, जैसे कोई मन्त्र-मुग्ध। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि कविता से ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है जो सुनने वालों को मुग्ध करती है; पर मतलब यह है कि कविता स्वयं मन्त्र-मुग्ध की भाँति अग्रसर होती है। उसका प्रत्येक शब्द मतवाला होता है। उन शब्दों के चारों ओर ऐसे वातावरण की सृष्टि होती है कि उसमें मुग्धता के सिवाय और कुछ भी नहीं होता। शब्दों की ध्वनि में मुग्धता होती है और उनके पारस्परिक सम्बन्ध में भी। ऐसी स्थिति में उनके भीतर बैठे हुए भाव भी मतवाले होते हैं। कल्पना में भी मादकता रहती है और वह मदिराक्षी की भाँति मुग्ध-गति से चलती है।

उस कल्पना में कवि का अनुभव अन्तर्हित होता है। वह अनुभव भी उत्कृष्ट रूप का होता है। उसे जानकर हम

कुछ क्षणों के लिए स्वयं कवि बन जाते हैं। कवि ने जिस वस्तु का वर्णन किया है, उसका भाव हमारे हृदय में उत्पन्न नहीं होता, बल्कि वह कविता स्वयं भाव का रूप बन जाती है। शब्दों में इतना ज़ोर रहता है कि वे हमारे व्यक्तित्व को बदल देते हैं। कविता भाव को नहीं जगाती, बल्कि वह स्वयं भाव बन कर सामने आ खड़ी होती है। यह कविता का कितना उत्कृष्ट रूप है! लेकिन यह बात तब तक नहीं होती, जब तक कि उन भावों में कवि का उन्माद और अनुभव उसी प्रकार न झूले, जिस प्रकार सजीले पालने में सुकुमार शिशु!

कविता के इन्हीं तीन तत्वों में मैंने श्रीमती सुभद्रा कुमारी की कविता का शृङ्गार पाया है। हृदय की परिस्थितियों का कला-रूप, शब्दों और भावों में मादकता और जीवन का वास्तविक अनुभव, इन्हीं तीन धाराओं में सुभद्रा जी की कविता का प्रवाह होता है। तीन धाराओं की यही त्रिवेणी हृदय में आनन्द का आविर्भाव करती है।

सुभद्रा जी की कविता में हमें हृदय की परिस्थितियों के जितने चित्र मिलते हैं, उन सबों में स्वाभाविकता, सरलता और सौन्दर्य है। ऐसे स्थलों में भावना हमें उसी प्रकार स्पर्श करती है, जिस प्रकार सरिता की लहर

अपने तट को। उस थपकी से एक ध्वनि उठती है। उससे हृदय में एक प्रकार की अशान्ति होती है, पर होती है वह सुखदायिनी। हृदय कुछ क्षणों के लिए सिहर उठता है; भय से नहीं, अशान्ति से! हम फिर आँखें बन्द कर उस मीठी अशान्ति में झूलने लगते हैं:—

तुम मुझे पूछते हो जाऊँ,
मैं क्या जवाब दूँ तुम्हीं कहो।
'जा......' कहते रुकती है ज़बान,
किस मुँह से तुमसे कहूँ रहो॥
मैं सदा रूठती ही आयी,
प्रिय तुम्हें न मैंने पहिचाना।
वह मान बान-सा चुभता है,
अब देख तुम्हारा यह जाना!!

(चलते समय)

यहाँ हृदय की भावनाओं के स्वर्ण-पंखों ने व्यर्थ की उड़ान नहीं भरी। स्वाभाविकता है, सरलता है, सौन्दर्य है—हमें हृदय की गहरी से गहरी आकांक्षा का एक चित्र मिलता है, जिसमें परिस्थिति का बहुत सुन्दर रङ्ग भरा गया है। प्रियतम के 'चलते समय' उठी हुई स्वाभाविक भावना ने हृदय को उस तीर से वेध दिया है, जिसमें मधुर पीड़ा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

सुभद्रा कुमारी की कविता में एक प्रकार की मादकता है, मुग्धता है, प्रत्येक शब्द बिजली से भरा गया है। इसीसे भावना जीवित होकर, हमारे हृदय में प्रवेश कर, हमारी भावना को जगाती है। हमारी भावना भी शक्ति-सम्पन्न होकर कविता की भावना से मिल जाती है और हमारे हृदय की भावनाएँ श्रीमती सुभद्रा कुमारी जी के हृदय की भावनाओं का रूप रख लेती हैं। ऐसी स्थिति में भावना भावना ही रहती है, कल्पना का रूप नहीं रखती। वह पृथ्वी की वस्तु होती है, आकाश की नहीं। उसमें संसार की मुग्धता को अपने पास बुलाने की शक्ति आ जाती है। 'दिल में एक चुभन-सी' पैदा हो जाती है।

बहिन आज फूली समाती न मन में।
तड़ित् आज फूली समाती न घन में॥
घटा है न फूली समाती गगन में।
लता आज फूली समाती न वन में॥
कहीं राखियाँ हैं, चमक है कहीं पर,
कहीं बूँद है, पुष्प प्यारे खिले हैं।
ये आई है राखी, सुहाई है पूनो,
बधाई उन्हें जिनको भाई मिले हैं॥

मैं हूँ वहिन किन्तु भाई नहीं है।
है राखी सजी पर कलाई नहीं है॥
है भादों घटा किन्तु छाई नहीं है।
नहीं है ख़ुशी पर रुलाई नहीं है॥

इन पंक्तियों के द्वारा कितने भावों की मादकता को, कितने विचारों के पागलपन को, एक वार ही, एक ही भावना से वाँध कर उत्सुकता के उदधि मे फेंक दिया गया है!! प्रत्येक शब्द जीवित हो कर वोल रहा है। हृदय प्रफुल्लित हो कर आलोकित हो जाता है, माने उस पर हीरक-ज्योति की रश्मियाँ एक साथ पड़ी हों।

इस मादकता में अनुभव का मूल्य अधिक है। श्रीमती सुभद्रा जी ने असहयोग और सत्याग्रह में विशेप भाग लिया है। वे राष्ट्रीय भावों से ओत-प्रोत हैं। उनके हृदय में मातृ-भूमि और देश के जो विचार हैं और फलतः उन्हें उन विचारों से जो अनुभूति हुई है, उसका प्रतिविम्व स्पष्ट-रूप से उनकी कविताओं में देखा जाता है।

उनकी अधिकांश कविताएँ राष्ट्रीय हैं, क्योंकि उनका जीवन ही राष्ट्रीय भाव-मय है। सच्चे अनुभव ने उनकी इन कविताओं को अधिक स्पष्ट और हृदयग्राही वना दिया है।

राष्ट्रीय कविताओं की उत्कृष्टता की दृष्टि से मैं इनकी कविताओं को 'एक भारतीय आत्मा' की कविताओं से किसी प्रकार हीन नहीं समझता। एक बात और है। इन्होंने अपनी राष्ट्रीय कविताओं में वीरभाव के साथ ही साथ भावुकता भी इस प्रकार भर दी है कि उन कविताओं का मूल्य वस्तुतः देश के मूल्य के बराबर हो जाता है। 'मातृ-मन्दिर' में साहित्यिकता और देशभक्ति की कैसी मनोहर 'गंगा-जमुनी' है :—

एक ओर यदि—

देव ! वे कुञ्जें उजड़ी पड़ीं,
और वह कोकिल उड़ ही गयी।
हटायीं हमने लाखों बार,
किन्तु वे घड़ियाँ जुड़ ही गयीं॥

है, तो दूसरी ओर—

विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र
पाप से असहयोग लें ठान।
गुँजा डालें स्वराज्य की तान
और सब हो जावें बलिदान॥

की दर्प-भरी ध्वनि गूँजती है। यहाँ दोनों भावों के

मिश्रण ने सुभद्रा जी की कविता को बहुत ऊँचा उठा दिया है। 'झाँसी की रानी' कविता में बुन्देलों और हरबोलों के बदले प्रत्येक शब्द वह पुरानी कहानी इतने तीव्र भाव से कहता है कि हृदय तड़प उठता है, विचार-धारा में तूफ़ान आ जाता है, आकांक्षा अशान्ति के झकोरों में झूमने लगती है—और ताल देकर समीप की वायु भी गूँज उठती है—

ख़ूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी !

देशभक्ति के भावों ने सुभद्रा कुमारी जी को वह शक्ति दे दी है, जिससे वे देश की अशान्ति की चित्रावली में मनोहर रङ्ग भरती हैं। ऐसा रङ्ग, जिसमें उनके आँसू का पानी घुला हुआ है। 'विस्मृत की स्मृति' में हृदय की अशान्ति ने कितने सुन्दर व्यंग का रूप लिया है—

उधर तुम कहलाते गोपाल,
इधर ये गौएँ दिन-दिन कटें।
कहो, तुमही कह दो गोपाल,
तुम्हें अब कौन नाम से रटें ?

प्रेम में भी उनकी अनुभूति कुछ कम गहरी नहीं है। साधारण घटनाओं में भी वे जीवन का सौन्दर्य देखती हैं।

प्रेम की चुटकियाँ और व्यंग बहुत ही हृदयग्राही हैं। दो-एक उदाहरण पर्याप्त होंगे—

बहुत दिनों तक हुई परीक्षा,
अब रूखा व्यवहार न हो।
अजी, बोल तो लिया करो तुम,
चाहे मुझ पर प्यार न हो॥

× × ×

पूजा और पुजापा प्रभुवर
इसी पुजारिन को समझो!
दान-दक्षिणा और निछावर
इसी भिखारिन को समझो!!

× × ×

मुझे भुला दो या ठुकरा दो, कर लो जो कुछ भावे।
लेकिन यह आशा का अंकुर नहीं सूखने पावे॥
करके कृपा कभी दे देना शीतल जल के छींटे।
अवसर पाकर वृक्ष बने यह, दे फल शायद मीठे॥

कितनी विदग्धता है, प्रेमी हृदय की कितनी सच्ची अभिव्यक्ति है! इसी प्रकार इनकी सभी कविताओं में कुछ-न-कुछ चमत्कार और कवित्व है। इस पुस्तक के पाठक स्वयं इसका अनुभव करेंगे।

इस कविता-संग्रह में सर्वत्र सरलता का साम्राज्य है। इस सरलता से कहीं-कहीं हानि भी हुई है। कुछ कविताएँ बहुत ही साधारण हो गई हैं। 'शिशिर-समीर' में कोई नूतनता नहीं है, उसी प्रकार 'जल-समाधि' के लम्बे विस्तार में भावना बिखर-सी गई है। कल्पना का विकास उच्छृङ्खल होकर सौन्दर्य-सीमा के भीतर नहीं आ सका।

हम सुभद्रा जी की कविता का आदर करते हैं। उसमें मादकता है, सौन्दर्य है और हृदय की अनुभूत-परिस्थितियों की मनोहर झाँकी है। सुभद्रा जी हिन्दी-साहित्य की कोकिला हैं, जो भावना की ऊँची डाल पर बैठकर गाती हैं। उस समय हृदय-मुकुल विकसित हो उठता है।

हिन्दी-विभाग
प्रयाग-विश्व-विद्यालय
१४-११-३०

रामकुमार वर्मा एम० ए०
(हिन्दी प्रोफ़ेसर)

कविताएँ

मुकुल

फूल के प्रति

डाल पर के मुरझाए फूल !
हृदय में मत कर वृथा गुमान ।
नहीं है सुमन कुञ्ज में अभी
इसी से है तेरा सम्मान ॥

मधुप जो करते अनुनय विनय
बने तेरे चरणों के दास ।
नयी कलियों को खिलती देख
नहीं आवेंगे तेरे पास ॥

सहेगा यह कैसे अपमान ?
रहेगा वृथा हृदय में शूल ।
भुलाया है, मत करना याद
डाल पर के मुरझाए फूल !!

मुरझाया फूल

यह मुरझाया हुआ फूल है,
इसका हृदय दुखाना मत ।
स्वयं बिखरने वाली इसकी
पङ्खड़ियाँ बिखराना मत ॥
जीवन की अन्तिम घड़ियों में
देखो, इसे रुलाना मत ।
गुजरो अगर पास से इसके
इसे चोट पहुँचाना मत ॥

अगर हो सके तो ठण्डी—
बूँदें टपका देना प्यारे ।
जल न जाय सन्तप्त हृदय
शीतलता ला देना प्यारे ॥

कलह-कारण

कड़ी आराधना करके बुलाया था उन्हें मैंने।
पदों को पूजने के ही लिए थी साधना मेरी॥
तपस्या नेम व्रत करके रिझाया था उन्हें मैंने।
पधारे देव, पूरी हो गयी आराधना मेरी॥

उन्हें सहसा निहारा सामने, संकोच हो आया।
मुँदीं आँखें सहज ही लाज से नीचे झुकी थी मैं॥
कहूँ क्या प्राणधन से यह हृदय में सोच हो आया।
वही कुछ बोल दें पहले, प्रतीक्षा में रुकी थी मैं॥

अचानक ध्यान पूजा का हुआ, झट आँख जो खोली।
नहीं देखा उन्हें, बस सामने सूनी कुटी देखी॥
हृदयधन चल दिये, मैं लाज से उनसे नहीं बोली।
गया सर्वस्व, अपने आपको दूनी दुखी देखी॥

चलते समय

तुम मुझे पूछते हो "जाऊँ" ?
मैं क्या जवाब दूँ तुम्हीं कहो !
'जा···' कहते रुकती है जबान
किस मुँह से तुमसे कहूँ रहो ?

सेवा करना था जहाँ मुझे
कुछ भक्ति-भाव दरसाना था।
उन कृपा-कटाक्षों का बदला
बलि होकर जहाँ चुकाना था॥

मैं सदा रूठती ही आयी,
प्रिय ! तुम्हें न मैंने पहिचाना।
वह मान बाण-सा चुभता है,
अब देख तुम्हारा यह जाना॥

भ्रम

देवता थे वे, हुए दर्शन, अलौकिक रूप था।
देवता थे, मधुर सम्मोहन स्वरूप अनूप था॥
देवता थे, देखते ही बन गयी थी भक्त मैं।
हो गयी उस रूप-लीला पर अटल आसक्त मैं॥

देर क्या थी? यह मनोमन्दिर यहाँ तैयार था।
वे पधारे यह अखिल जीवन बना त्यौहार था।
झाँकियों की धूम थी, जगमग हुआ संसार था।
सो गयी सुख नींद में आनन्द अपरम्पार था॥

किन्तु उठकर देखती हूँ, स्वप्न है वो पूर्ति थी।
मैं जिसे समझे हुए थी देवता, वह मूर्ति थी॥

समर्पण

सूखी सी अधखिली कली है
परिमल नहीं, पराग नहीं ।
किन्तु कुटिल भौंरों के चुम्बन-
का है इस पर दाग नहीं ॥

तेरी अतुल कृपा का बदला
नहीं चुकाने आयी हूँ ।
केवल पूजा में ये कलियाँ
भक्ति-भाव से लायी हूँ ॥

समर्पण

प्रणय-जल्पना चिन्त्य-कल्पना
मधुर वासनाएँ प्यारी ।
मृदु अभिलाषा, विजयी आशा
सजा रही थीं फुलवारी ॥

किन्तु गर्व का झोंका आया
यदपि गर्व वह था तेरा ।
उजड़ गयी फुलवारी सारी
बिगड़ गया सब कुछ मेरा ॥

बची हुई स्मृति की ये कलियाँ
मैं बटोर कर लायी हूँ ।
तुझे सुझाने, तुझे रिझाने
तुझे मनाने आयी हूँ ॥

प्रेम-भाव से हो अथवा हो
घृणा-भाव से ही स्वीकार ।
ठुकराना मत, इसे जानकर
मेरा टूटा-सा उपहार ॥

ठुकरा दो या प्यार करो

देव ! तुम्हारे कई उपासक
कई ढङ्ग से आते हैं ।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे
कई रङ्ग के लाते हैं ॥

ठुकरा दो या प्यार करो

धूमधाम से साजबाज से
मन्दिर में वे आते हैं।
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएँ
लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं॥

मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी
जो कुछ साथ नहीं लायी।
फिर भी साहस कर मन्दिर में
पूजा करने को आयी॥

धूप दीप नैवेद्य नहीं है
झाँकी का शृंगार नहीं।
हाय ! गले में पहिनाने को
फूलों का भी हार नहीं॥

मैं कैसे स्तुति करूँ तुम्हारी ?
है स्वर में माधुर्य नहीं।
मन का भाव प्रकट करने को
वाणी में चातुर्य नहीं॥

नहीं दान है, नहीं दक्षिणा
खाली हाथ चली आयी।
पूजा की विधि नहीं जानती
फिर भी नाथ! चली आयी॥

पूजा और पुजापा प्रभुवर!
इसी पुजारिन को समझो।
दान दक्षिणा और निछावर
इसी भिखारिन को समझो॥

मैं उन्मत्त, प्रेम का लोभी
हृदय दिखाने आयी हूँ।
जो कुछ है, बस यही पास है,
इसे चढ़ाने आयी हूँ॥

चरणों पर अर्पित है, इसको
चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है,
ठुकरा दो या प्यार करो॥

स्मृतियाँ

क्या कहते हो ? किसी तरह भी
भूलूँ और भुलाने दूँ !
गत जीवन को तरल मेघ-सा,
स्मृति-नभ में मिट जाने दूँ !!

शान्ति और सुख से मैं
जीवन के दिन शेष बिताने दूँ !
कोई निश्चित मार्ग बनाकर
चलूँ, तुम्हें भी आने दूँ !!

कैसा निश्चित मार्ग, हृदय-धन !
समझ नहीं पाती हूँ मैं।
यहीं समझने एक बार फिर,
क्षमा करो, आती हूँ मैं॥

जहाँ तुम्हारे चरण वहीं पर,
पद-रज बनी पड़ी हूँ मैं।
मेरा निश्चित मार्ग यही है,
ध्रुव-सी अटल अड़ी हूँ मैं॥

भूलो तो सर्वस्व ! भला वे
दर्शन की प्यासी घड़ियाँ।
भूलो मधुर मिलन को, भूलो
बातों की उलझी लड़ियाँ॥

भूलो प्रीति-प्रतिज्ञाओं को,
आशाओं, विश्वासों को।
भूलो अगर भूल सकते हो,
आँसू और उसाँसों को॥

मुझे छोड़कर तुम्हें प्राणधन !
सुख या शान्ति नहीं होगी।
यही बात तुम भी कहते थे,
सोचो, भ्रान्ति नहीं होगी॥

स्मृतियाँ

सुख को मधुर बनाने वाले,
दुख को भूल नहीं सकते।
सुख में कसक उठूँगी मैं प्रिय!
मुझको भूल नहीं सकते॥

मुझको कैसे भूल सकोगे,
जीवन-पथ दर्शक मैं थी।
प्राणों की थी प्राण, हृदय की,
सोचो तो, हर्षक मैं थी॥

मैं थी उज्ज्वल स्फूर्ति, पूर्ति
थी प्यारी अभिलाषाओं की।
मैं ही तो थी मूर्ति तुम्हारी
बड़ी बड़ी आशाओं की॥

आओ, चलो, कहाँ जाओगे,
मुझे अकेली छोड़ सखे!
बँधे हुए हो हृदय-पाश में,
नहीं सकोगे तोड़ सखे!!

जहाँ तुम्हारे चरण वहीं पर,
पद-रज बनी पड़ी हूँ मैं।
मेरा निश्चित मार्ग यही है,
ध्रुव-सी अटल अड़ी हूँ मैं॥

भूलो तो सर्वस्व! भला वे
दर्शन की प्यासी घड़ियाँ।
भूलो मधुर मिलन को, भूलो
बातों की उलझी लड़ियाँ॥

भूलो प्रीति-प्रतिज्ञाओं को,
आशाओं, विश्वासों को।
भूलो अगर भूल सकते हो,
आँसू और उसाँसों को॥

मुझे छोड़कर तुम्हें प्राणधन!
सुख या शान्ति नहीं होगी।
यही बात तुम भी कहते थे,
सोचो, भ्रान्ति नहीं होगी॥

स्मृतियाँ

सुख को मधुर बनाने वाले,
दुख को भूल नहीं सकते।
सुख में कसक उठूँगी मैं प्रिय!
मुझको भूल नहीं सकते॥

मुझको कैसे भूल सकोगे,
जीवन-पथ दर्शक मैं थी।
प्राणों की थी प्राण, हृदय की,
सोचो तो, हर्षक मैं थी॥

मैं थी उज्ज्वल स्फूर्ति, पूर्ति
थी प्यारी अभिलाषाओं की।
मैं ही तो थी मूर्ति तुम्हारी
बड़ी बड़ी आशाओं की॥

आओ, चलो, कहाँ जाओगे,
मुझे अकेली छोड़ सके!
बँधे हुए हो हृदय-पाश में,
नहीं सकोगे तोड़ सके!!

जाने दे

कठिन प्रयत्नों से सामग्री
मैं बटोर कर लायी थी।
बड़ी उमङ्गों से मन्दिर में,
पूजा करने आयी थी॥

पास पहुँच कर जो देखा तो,
आहा! द्वार खुला पाया।
जिसकी लगन लगी थी उसके
दर्शन का अवसर आया॥

हर्ष और उत्साह बढ़ा, कुछ
लज्जा, कुछ सङ्कोच हुआ।
उत्सुकता, व्याकुलता कुछ कुछ,
कुछ सम्भ्रम, कुछ सोच हुआ॥

मन में था विश्वास कि उनके
अब तो दर्शन पाऊँगी।
प्रियतम के चरणों पर अपना
मैं सर्वस्व चढ़ाऊँगी॥

फाड़ दूँगी अन्तस्तल भी, मैं
उनसे नहीं छिपाऊँगी।
मानिनि हूँ, पर मान तजूँगी,
चरणों पर बलि जाऊँगी॥

पूरी हुई साधना मेरी,
मुझको परमानन्द मिला।
किन्तु बढ़ी तो हुआ दृश्य क्या ?
मन्दिर का पट बन्द मिला॥

निठुर पुजारी! यह क्या? मुझपर
तुझे न तनक दया आयी?
किया द्वार को बन्द हाय! मैं
प्रियतम को न देख पायी!!

करके कृपा पुजारी! मुझको
ज़रा वहाँ तक जाने दे।
मुझको भी थोड़ी सी पूजा
प्रियतम तक पहुँचाने दे॥

छूने दे उनके चरणों को,
जीवन सफल बनाने दे।
खोल, खोल दे द्वार, पुजारी!
मन की व्यथा मिटाने दे॥

बहुत बड़ी आशा से आयी हूँ,
मत कर तू मुझे निराश।
एक बार, बस एक बार तू
जाने दे प्रियतम के पास॥

शिशिर-समीर

शिशिर-समीरण ! किस धुन में हो,
कहो किधर तुम जाते हो ?
धीरे-धीरे क्या कहते हो ?
या यों ही कुछ गाते हो ॥

क्यों ख़ुश हो ? क्या मन भाता है ?
क्यों इतने इठलाते हो ?
शिशिर-समीरण ! सच बतला दो,
किसे ढूँढ़ने जाते हो ?

पारितोषिक का मूल्य

मधुर मधुर मीठे शब्दों में
मैंने गाना गाया एक।
वे प्रसन्न हो उठे ख़ुशी से
शाबासी दी मुझे अनेक॥

निश्छल मन से मैंने उनकी
की सभक्ति सादर सेवा।
मिला मुझे उनसे कृतज्ञता—
का सुमधुर मीठा मेवा॥

सुन्दर वस्त्राभूषण ले
मैंने रुचि से शृङ्गार किया।
मेरी सुन्दरता का उनने
झट तस्वीर उतार लिया॥

प्रेमोन्मत्त हो गयी, मैंने
उन्हें प्रेम निज दिखलाया।
उसी समय बदले में उनसे
एक प्रेम-चुम्बन पाया॥

पारितोषिक का मूल्य

शाबाशी, कृतज्ञता अथवा
उस तस्वीर खिंचाने से ।
हुई खुशी से मैं पागल-सी
प्रिय का चुम्बन पाने से ॥

घटने लगा किन्तु धीरे-धीरे
यह पागलपन मेरा ।
उतर गया यह नशा, हो गया
कुछ उदास-सा मन मेरा ॥

गाना एक और गाया, अब
केवल मन बहलाने को ।
जन-सेवा के लिए चला यहाँ
भरसक पद्य लिखाने को ॥

हाँ पुरस्कार भी लिया मैंने
बनी प्रेम दीवानी भी ।
इतना व्यय है अधिक उसका यों
और अधिक हैरानी भी ॥

छिपा हुआ कोई सुनता था
सुललित मधुर गीत मेरा।
सेवा औ शृङ्गार प्रेम था
जिसमें बढ़ता बहुतेरा॥

सुनने वाला बोला किन्तु न
शब्द सुनाई देते थे।
करते हुए प्रशंसा विकसित
नेत्र दिखाई देते थे॥

"पहले में यह बात नहीं थी,
है यह तो अपूर्व सङ्गीत।"
मेरी प्रसन्नता ने प्रतिध्वनि—
किया कि प्यारे वह सङ्गीत—

चुका रही थी शाबासी के
पुरस्कार का कोरा दाम।
वही न्यूनता ही थी बस
उस पुरस्कार का सच्चा दाम॥

चिन्ता

लगे जाने, हृदयधन से—
कहा मैंने कि मत जाओ।
कहीं हो प्रेम में पागल
न पथ में ही मचल जाओ॥

कठिन है मार्ग, मुझको
मंजिलें वे पार करनी हैं।
उमंगों की तरंगों पर चढ़ूँ—
शायद फिसल जाओ॥

तुम्हें कुछ चोट आ जाए
कहीं लाचार लौटूँ मैं।
हठीले प्यार से व्रत-भंग
की घड़ियाँ निकट आओ॥

प्रियतम से

बहुत दिनों तक हुई परीक्षा
अब रूखा व्यवहार न हो।
अजी बोल तो लिया करो तुम
चाहे मुझपर प्यार न हो॥

जिसकी हो कर रही सदा मैं
जिसकी अब भी कहलाती।
क्यों न देख इन व्यवहारों को
टूक-टूक फिर हो छाती?

मानिनि राधे !

थीं मेरा आदर्श बालपन से
तुम मानिनि राधे !
तुम-सी बन जाने को मैंने
व्रत नियमादिक साधे ॥

अपने को माना करती थी
मैं वृषभानु-किशोरी ।
भाव-गगन के कृष्णचन्द्र की
थी मैं चतुर-चकोरी ॥

था छोटा-सा गाँव हमारा
छोटी छोटी गलियाँ ।
गोकुल उसे मानती थी मैं
गोपी संग की अलियाँ ॥

कुटियों में रहती थी, पर
मैं उन्हें मानती कुञ्जें।
माधव का सन्देश समझती
सुन मधुकर की गुञ्जें॥

बचपन गया, नया रँग आया
और मिला वह प्यारा।
मैं राधा बन गयी, न था वह
कृष्णचन्द्र से न्यारा॥

किन्तु कृष्ण यह कभी किसी पर
ज़रा प्रेम दिखलाता।
नख-शिख से मैं जल उठती हूँ
खान-पान नहिं भाता॥

ख़ूनी भाव उठें उसके प्रति
जो हो प्रिय का प्यारा।
उसके लिए हृदय यह मेरा
बन जाता हत्यारा॥

मानिनि राधे !

मुझे बता दो मानिनि राधे !
प्रीति-रीति यह न्यारी ।
क्यों कर थी उन मनमोहन पर
अविचल भक्ति तुम्हारी ?

तुम्हें छोड़कर बन बैठे जो
मथुरा नगर-निवासी ।
पर कितने ही ब्याह किए जो
सुख-सौभाग्य-विलासी ॥

सुनती उनके गुण-गाथा को ही
उनको ही गाती थीं ।
उन्हें याद कर सब दुख भूली
तन मन बलि जाती थीं ॥

नयनों के मृदु मूक पुजारी
मानस की मूरत पर ।
रहीं झुकी-सी जीवन भर
उस मृदु श्याम-सूरत पर ॥

श्यामा कहला कर, हो बैठी
बिना दाम की चेरी।
मृदुल उमङ्गों की तानें थीं—
तू मेरा, मैं तेरी॥

जीवन का न्यौछावर हा हा!
तुच्छ उन्होंने लेखा।
गये, सदा के लिए गये
फिर कभी न मुड़कर देखा॥

अटल प्रेम फिर भी कैसे है
कह दो राधारानी!
कह दो मुझे, जली जाती हूँ,
छोड़ो शीतल पानी॥

ले आदर्श तुम्हारा, रह-रह
मन को समझाती हूँ।
किन्तु बदलते भाव न मेरे
शान्ति नहीं पाती हूँ॥

आहत की अभिलाषा

जीवन को न्योछावर करके तुच्छ सुखों को लेना।
अर्पण कर सबकुछ चरणों पर तुममें ही सब देना॥
थे तुम मेरे इष्ट देवता, अधिक प्राण से प्यारे।
तन से, मन से, इस जीवन से कभी न थे तुम न्यारे॥

अपना तुमको समझ, समझती थी, हूँ दासी तुम्हारी।
तुम मुझको प्यारे हो, मैं हूँ तुम्हें प्राण-सी प्यारी॥
दुनिया की परवाह नहीं थी तुम में ही थी भूली।
पाकर तुम-सा सुहृद गर्व से कितनी थी मैं फूली॥

तुमको सुखी देखना ही था जीवन का सुख मेरा।
तुमको दुखी देखकर पाती थी मैं कष्ट घनेरा॥
मेरे तो निराधार सहारे तुम और न दूजा कोई।
जागी-सोई रहूँ प्यार ही मन-निश्चल हूँ सोई॥

मेरे हृदय-पटल पर अङ्कित है प्रिय ! नाम तुम्हारा ।
हृदय देश पर पूर्णरूप से है साम्राज्य तुम्हारा ॥
है विराजती मन-मन्दिर में सुन्दर मूर्ति तुम्हारी ।
प्रियतम की उस सौम्य-मूर्ति की हूँ मैं भक्त पुजारी ॥

किन्तु हाय ! जब अवसर पाकर मैंने तुमको पाया ।
उस निःस्वार्थ प्रेम की पूजा को तुमने ठुकराया ॥
मैं फूली फिरती थी बनकर प्रिय-चरणों की चेरी ।
किन्तु तुम्हारे निठुर हृदय में नहीं चाह थी मेरी ॥

मेरे मन में घर कर तुमने निज अधिकार बढ़ाया ।
किन्तु तुम्हारे मन में मैंने तिलभर ठौर न पाया ॥
अब जीवन का ध्येय यही है तुमको सुखी बनाना ।
लगी हुई सेवा में प्यारे ! चरणों पर बलि जाना ॥

मुझे भुला दो या ठुकरा दो, कर लो जो कुछ भावे ।
लेकिन यह आशा का अङ्कुर नहीं सूखने पावे ॥
करके कृपा कभी दे देना शीतल जल के छींटे ।
अवसर पाकर वृक्ष बने यह, दे फल शायद मीठे ॥

जल-समाधि

यदि कुशल हो तो मेरी
ऐसा चित्र बना दे तू ।
दुखित हृदय के भाव हमारे
सब पर स्पष्ट दिखला दे तू ॥
३।

मेरे हृदय-पटल पर अङ्कित है प्रिय ! नाम तुम्हारा ।
हृदय देश पर पूर्णरूप से है साम्राज्य तुम्हारा ॥
है विराजती मन-मन्दिर में सुन्दर मूर्ति तुम्हारी ।
प्रियतम की उस सौम्य-मूर्ति की हूँ मैं भक्त पुजारी ॥

किन्तु हाय ! जब अवसर पाकर मैंने तुमको पाया ।
उस निःस्वार्थ प्रेम की पूजा को तुमने ठुकराया ॥
मैं फूली फिरती थी बनकर प्रिय-चरणों की चेरी ।
किन्तु तुम्हारे निठुर हृदय में नहीं चाह थी मेरी ॥

मेरे मन में घर कर तुमने निज अधिकार बढ़ाया ।
किन्तु तुम्हारे मन में मैंने तिलभर ठौर न पाया ॥
अब जीवन का ध्येय यही है तुमको सुखी बनाना ।
लगी हुई सेवा में प्यारे ! चरणों पर बलि जाना ॥

मुझे भुला दो या ठुकरा दो, कर लो जो कुछ भावे ।
लेकिन यह आशा का अङ्कुर नहीं सूखने पावे ॥
करके कृपा कभी दे देना शीतल जल के छींटे ।
अवसर पाकर वृक्ष बने यह, दे फल शायद मीठे ॥

उसी भँवर के निकट, किनारे
युवक खेलते हों दो-चार ।
हँसते और हँसाते हों वे
निज चञ्चलता के अनुसार ॥

किन्तु हाय ! धारा में पड़कर
तीन युवक बह जाते हों ।
थके हुए फिर किसी शिला से
टकराकर रुक जाते हों ॥
उनके शुभ पर बच जाने का
शुद्ध सन्तोष दिया देना ।
किन्तु साथ ही घबराहट में
उत्कण्ठा कल्पना देना ॥

गहरी धारा में नीचे जब
एक हृदय का छिपजाना ।
आँखें और पता का देना
देख, सन्देह पर रह जाना ॥

प्रभु की निर्दयता, जीवों की
कातरता दरसा दे तू।
मृत्यु समय के गौरव को भी
भली-भाँति झलका दे तू॥

भाव न बतलाये जाते हैं
शब्द न ऐसे पाती हूँ।
इसीलिए हे कुशल चितेरे!
तुझको विनय सुनाती हूँ॥
देख, सम्हल कर, खूब सम्हल कर
ऐसा चित्र बनाना तू।
सुन्दर इठलाती सरिता पर
मन्दिर-घाट दिखाना तू॥

वहीं पास के पुल से बढ़कर
धारा तेज़ बहाना तू।
चट्टानों से टकरा कर फिर
भारी भँवर घुमाना तू॥

उसी भँवर के निकट, किनारे
युवक खेलते हों दो-चार।
हँसते और हँसाते हों वे
निज चञ्चलता के अनुसार॥

किन्तु हाय ! धारा में पड़कर
तीन युवक बह जाते हों।
थके हुए फिर किसी शिला से
टकराकर रुक जाते हों॥
उनके मुख पर दया आने का
कुछ सन्तोष दिखा देना।
किन्तु नाव हो पश्चात् में
[illegible] [illegible] देना॥

गहरी धारा में नीचे जब
एक हृदय बह दिखलाना।
[illegible] उसे पता [illegible] देना
देह, [illegible] [illegible] [illegible] जाना [illegible]

धारा में सुन्दर बलिष्ठ-तन
युवक एक दिखलाता हो।
क्रूर शिलाओं में पड़कर जो
तड़प-तड़प रह जाता हो॥

तो भी मन्द हँसी की रेखा
उसके मुँह पर दिखलाना।
नहीं मौत से डरता था वह,
हँस सकता था, बतलाना॥
किन्तु साथ ही धीरे-धीरे
बेसुध होता जाता हो।
क्षण-क्षण में सर्वस्व दीन का
मानो लुटता जाता हो॥

ऊपर आसमान में धुँधला
कुछ प्रकाश दिखला देना।
एक ओर श्यामा तरुणी का
सुन्दर रूप बना देना॥

जल-समाधि

बिखरे बाल, विरस वदना कुछ
व्याकुल-सी दिखलाती हो।
गोदी में दुधमुहीं बालिका—
लिए यहाँ पर आती हो॥

आशाभरी दृष्टि से प्रभु की—
ओर देखती जाती हो।
दुखिया का सर्वस्व न लुटने—
पावे, यही मनाती हो॥
इसके बाद किनारे जो न
पावे, यही बना देना।
अपनी ही इच्छा से अविकल
हृदय यहाँ खिला देना॥

चाहे तो प्रभु के चेहरे पर
करुणा भाव दिखाना न।
अथवा मन्द हँसी की रेखा,
या विस्मय बताना न॥

मेरा नया बचपन

बार बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी।
गया, ले गया तू जीवन की
सबसे मस्त ख़ुशी मेरी॥

चिन्ता - रहित खेलना-खाना
वह फिरना निर्भय स्वच्छन्द।
कैसे भूला जा सकता है
बचपन का अतुलित आनन्द?

ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था
छुआछूत किसने जानी?
बनी हुई थी, अहा! झोपड़ी—
और चीथड़ों में रानी॥

मेरा नया बचपन

किये दूध के कुल्ले मैंने
चूस अँगूठा सुधा पिया।
किलकारी कल्लोल मचाकर
सूना घर आबाद किया॥

रोना और मचल जाना भी
क्या आनन्द दिखाते थे!
बड़े बड़े मोती-से आँसू
जयमाला पहनाते थे॥

मैं रोई, माँ काम छोड़कर
आयी, मुझको उठा लिया।
झाड़ - पोंछकर चूम - चूम
गीले गालों को सुखा दिया॥

दादा ने चन्दा दिखलाया
नेत्र-नीर युत दमक उठे।
धुली हुई मुस्कान देखकर
सबके चेहरे चमक उठे॥

वह सुख का साम्राज्य छोड़कर
मैं मतवाली बड़ी हुई।
लुटी हुई, कुछ ठगी हुई-सी
दौड़ द्वार पर खड़ी हुई॥

लाजभरी आँखें थीं मेरी
मन में उमँग रँगीली थी।
तान रसीली थी कानों में
चञ्चल छैल छबीली थी॥

दिल में एक चुभन-सी थी
यह दुनिया सब अलबेली थी।
मन में एक पहेली थी
मैं सबके बीच अकेली थी॥

मिला, खोजती थी जिसको
हे बचपन! ठगा दिया तू ने।
अरे! जवानी के फन्दे में
मुझको फँसा दिया तू ने॥

मेरा नया बचपन

सब गलियाँ उसकी भी देखीं
उसकी ख़ुशियाँ न्यारी हैं।
प्यारी, प्रीतम की रँग-रलियों
की स्मृतियाँ भी प्यारी हैं॥

माना मैंने युवा-काल का
जीवन ख़ूब निराला है।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का
उदय मोहने वाला है॥

किन्तु यहाँ झंझट है भारी
युद्ध-क्षेत्र संसार बना।
चिन्ता के चक्कर में पड़कर
जीवन भी है भार बना॥

आ जा, बचपन! एक बार फिर
दे दे अपनी निर्मल शान्ति।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली
वह अपनी प्राकृत विश्रान्ति॥

मुकुल

वह भोली-सी मधुर सरलता
वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या फिर आकर मिटा सकेगा
तू मेरे मन का सन्ताप?

मैं बचपन को बुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी।
नन्दन वन-सी फूल उठी
यह छोटी-सी कुटिया मेरी॥

'माँ ओ' कहकर बुला रही थी
मिट्टी खाकर आयी थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने आयी थी॥

पुलक रहे थे अङ्ग, दृगों में
कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर थी आह्लाद-लालिमा
विजय-गर्व था झलक रहा॥

मेरा नया बचपन

मैंने पूछा "यह क्या लायी?"
बोल उठी वह "माँ, काओ।"
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से
मैंने कहा—"तुम्हीं खाओ॥"

पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर
मुझ में नवजीवन आया॥

मैं भी उसके साथ खेलती
खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं
मैं भी बच्ची बन जाती हूँ॥

जिसे खोजती थी बरसों से
अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर
वह बचपन फिर से आया॥

बालिका का परिचय

यह मेरी गोदी की शोभा
सुख-सुहाग की है लाली।
शाही शान भिखारिन की है
मनो - कामना - मतवाली॥

दीप-शिखा है अन्धकार की
घनी घटा की उजियाली।
ऊषा है यह कमल-भृङ्ग की
है पतझड़ की हरियाली॥

सुधाधार यह नीरस दिल की
मस्ती मगन तपस्वी की।
जीवित ज्योति नष्ट नयनों की
सच्ची लगन मनस्वी की॥

बीते हुए बालपन की यह
क्रीड़ा - पूर्ण वाटिका है।
वही मचलना, वही किलकना
हँसती हुई नाटिका है॥

बालिका का परिचय

मेरा मन्दिर, मेरी मसजिद
काबा-काशी यह मेरी ।
पूजा-पाठ, ध्यान-जप-तप है
घट-घट-वासी यह मेरी ॥

कृष्णचन्द्र की क्रीड़ाओं को
अपने आँगन में देखो ।
कौशल्या के मातृमोद को
अपने ही मन में लेखो ॥

प्रभु ईसा की क्षमाशीलता
नबी मुहम्मद का विश्वास ।
जीव दया जिनवर गौतम की
आओ देखो इसके पास ॥

परिचय पूछ रहे हो मुझसे,
कैसे परिचय दूँ इसका ?
वही जान सकता है इसको,
माता का दिल है जिसका ॥

इसका रोना

(१)

तुम कहते हो मुझको इसका—
रोना नहीं सुहाता है।
मैं कहती हूँ, इस रोने से
अनुपम सुख छा जाता है॥

सच कहती हूँ इस रोने की
छवि को ज़रा निहारोगे।
बड़ी-बड़ी आँसू की बूँदों—
पर मुक्तावलि वारोगे॥

(२)

ये नन्हें-से ओठ और
यह लम्बी-सी सिसकी देखो।
यह छोटा-सा गला और
यह गहरी-सी हिचकी देखो॥

कैसी करुणा-जनक दृष्टि है!
हृदय उमड़कर आया है।
छिपे हुए आत्मीय भाव को
यह उभाड़कर लाया है॥

(३)

हँसी चाहती चहल-पहल को—
हाँ बहुधा दरसाती है।
पर रोने में अन्तरतम तक
की हलचल मच जाती है॥

जिससे सोती हुई आत्मा—
जगती है, अकुलाती है।
छूटे हुए किसी साथी को
अपने पास बुलाती है॥

(४)

मैं सुनती हूँ कोई मेरा
मुझको अहा ! बुलाता है ।
जिसकी करुणापूर्ण चीख़ से
मेरा केवल नाता है ॥

मेरे ऊपर वह निर्भर है
खाने, पीने, सोने में ।
जीवन की प्रत्येक क्रिया में
हँसने में ज्यों रोने में ॥

(५)

मैं हूँ उसकी प्रकृत सङ्गिनी
उसकी जन्म-प्रदाता हूँ ।
वह मेरी प्यारी बिटिया है
मैं ही उसकी माता हूँ ॥

तुमको सुनकर चिढ़ आती है
मुझको होता है अभिमान ।
जैसे भक्तों की पुकार सुन
गर्वित होते हैं भगवान ॥

झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरङ्गी को करने की सबने मनमें ठानी थी,

चमक उठी सन सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

कानपुर के नाना की मुँहबोली बहिन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

निःसन्तान मरे राजा जी
रानी शोक-समानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मनमें हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झण्डा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं, नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

छिनी राजधानी देहली की, लखनऊ छीना बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपुर, तंजौर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जब कि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,

बङ्गाले, मद्रास आदि की
भी तो वही कहानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

रानी रोयीं रनिवासों में, बेग़म ग़म से थीं बेज़ार,
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अख़बार,
'नागपूर के ज़ेवर ले लो' 'लखनउ के लो नौलख हार',

यों परदे की इज़्ज़त परदेशी
के हाथ बिकानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुन्धूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चण्डी का कर दिया प्रकट आह्वान,

हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो
सोई ज्योति जगानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी अन्तरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,

जबलपूर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

इस स्वतन्त्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आये काम,
नाना धुन्धूपन्त, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज ज़ुर्म कहलाती
उनकी जो क़ुरबानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेन्ट वौकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वन्द्व असमानों में,

ज़ख्मी होकर वौकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

रानी बढ़ी, कालपी आई, कर सौ मील निरन्तर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

अंग्रेज़ों के मित्र सेंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आयी थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खायी थी,
काना और मन्दरा सखियाँ रानी के सँग आयी थीं,
युद्धक्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचायी थी,

पर, पीछे ह्यूरोज़ आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था वह सङ्कट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार,

घायल होकर गिरी सिंहिनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

रानी गयी सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतन्त्रता नारी थी,

मुझे गर्व है किन्तु राखी है सूनी।
वह होता, खुशी तो क्या होती न दूनी ?
हम मङ्गल मनावें, वह तपता है धूनी।
है घायल हृदय, दर्द उठता है खूनी ॥

है आती मुझे याद चित्तौर गढ़ की.
धधकती है दिल में वह जौहर की ज्वाला।
हैं माता-बहिन रो के उसको बुझातीं
कहो भाई, तुमको भी है कुछ कसाला ? ॥

है, तो बढ़े हाथ, राखी पड़ी है।
रेशम-सी कोमल नहीं यह कड़ी है॥
अजी देखो लोहे की यह हथकड़ी है।
इसी प्रण को लेकर बहिन यह खड़ी है॥

आते हो भाई ? पुनः पूछती हूँ—
कि माता के बन्धन की है लाज तुमको ?
—तो बन्दी बनो, देखो बन्धन है कैसा,
चुनौती यह राखी की है आज तुमको ॥

विजयी मयूर

विजयी मयूर

तू गरजा, गरज भयंकर थी,
कुछ नहीं सुनाई देता था।
घनघोर घटाएँ काली थीं,
पथ नहीं दिखाई देता था॥

लाना सँग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले।
हो सुगन्ध भी मन्द, ओस से कुछ-कुछ गीले॥
किन्तु न तुम उपहार - भाव आकर दरसाना।
स्मृति में पूजा - हेत यहाँ थोड़े बिखराना॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर॥
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं।
अपने प्रिय परिवार - देश से भिन्न हुए हैं॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इस लिए चढ़ाना।
करके उनकी याद अश्रु के ओस बहाना॥
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर।
शुष्क-पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर॥

यह सब करना, किन्तु
बहुत धीरे - से आना।
यह है शोक - स्थान
यहाँ मत शोर मचाना॥

मेरी कविता

मुझे कहा कविता लिखने को,
लिखने बैठा मैं तत्काल।
पहले लिखा—"जालिम जाड़ा",
कहा कि "बस, हो गये निहाल॥"

मुझे और कुछ नहीं सूझता,
हे-ईश्वर यह सूझी बात।
देने से पद क्या होता है,
कुछ न बनेगा उसका घात॥

सुन कर यह हँसा भैया हो,
मैंने कहा—"अरे कुछ धीर।
तुमको हँसने देता नहीं,
फिर कुछ कहें न टाला धीर॥"

कहा—"न मैं कुछ लिखने दूँगा,
मुझे चाहिए प्रेम - कथा।"
मैंने कहा—"नवेली है वह,
रम्य - वदन है चन्द्र यथा॥

अहा! मग्न हो उछल पड़े वे,
मैंने कहा—"सुनो चुपचाप।"
बड़ी - बड़ी - सी भोली आँखें,
केशपाश ज्यों काले साँप॥

भोली - भाली आँखें देखो,
उसे नहीं तुम रुलवाना।
उसके मुँह से प्रेम भरी,
कुछ मीठी बातें कहलाना॥

हाँ, वह रोती नहीं कभी भी,
और नहीं कुछ कहती है।
शून्य दृष्टि से देखा करती,
खिन्नमना - सी रहती है॥

करके याद पुराने सुख को,
कभी चौंक - सी पड़ती है।
भय से कभी काँप जाती है,
कभी क्रोध में भरती है॥

कभी किसी की ओर देखती
नहीं दिखाई देती है।
हँसती नहीं किन्तु चुपके से,
कभी - कभी रो लेती है॥

सोने, हल्दी के रंग से,
कुछ पीली उसकी सारी है।
लाल - लाल से धब्बे हैं कुछ,
अथवा लाल किनारी है॥

उसका और नाम ! कविता है,
है पर मुझे देश से लाज।
है सिन्दूर - बिन्दु से शोभित,
उसका सब ही सुन्दर-सुन्दर साज॥

अबला है, उसके पैरों में
बनी महावर की लाली।
हाथों में मेंहदी की लाली,
वह दुखिया भोली-भाली॥

उसी बाग की ओर शाम को,
जाती हुई दिखाती है।
प्रातःकाल सूर्योदय से,
पहले ही फिर आती है॥

लोग उसे पागल कहते हैं,
देखो तुम न भूल जाना।
तुम भी उसे न पागल कहना,
मुझे क्लेश मत पहुँचाना॥

उसे लौटती समय देखना,
रम्य वदन पीला-पीला।
सारी का वह लाल छोर भी
रहता है बिलकुल गीला॥

दामन भी फटते हैं उनको
कोई कोई तलवारें ।
उसे देखना, किन्तु न ऐसी
गलती तुम करना प्यारे ॥

पानी और हृदय में धड़कन
कुछ उसके दिखलाती हैं ।
पर भी प्रतिदिन क्षण-क्षण में
कुछ धीमी होती जाती है ॥

किसी रोज़, सम्भव है, उसकी
धड़कन बिलकुल मिट जावे ।
उसकी भोली-भाली आँखें
हाय ! सदा को मुँद जावें ॥

उसकी ऐसी दशा देखकर
आँसू चार बहा देना ।
उसके मुख में तुलसी गंगाजल
तुम भी राम नाम लेना ॥

राखी

भैया कृष्ण ! भेजती हूँ मैं
राखी अपनी, यह लो आज।
कई बार जिसको भेजा है
सजा-सजाकर नूतन साज ॥

लो आओ, भुजदण्ड उठाओ
इस राखी में बँध जाओ।
भरत-भूमि की रजभूमी को
एक बार फिर दिखलाओ ॥

वीर चरित्र राजपूतों का
पढ़ती हूँ मैं राजस्थान।
पढ़ते-पढ़ते आँखों में
छा जाता राखी का आख्यान ॥

मैंने पढ़ा, शत्रुओं को भी
जब-जब राखी भिजवायी।
रक्षा करने दौड़ पड़ा वह
राखी-बन्द-शत्रु-भाई ॥

किन्तु देखना है, यह मेरी
राखी क्या दिखलाती है ।
क्या निस्तेज कलाई पर ही
बँधकर यह रह जाती है ॥

देखो भैया, भेज रही हूँ
तुमको—तुमको राखी आज ।
साखी राजस्थान बनाकर
रख लेना राखी की लाज ॥

हाथ काँपता, हृदय धड़कता
है मेरी भारी आवाज़ ।
अब भी चौंक-चौंक उठता है
जलियाँ का वह गोलन्दाज़ ॥

राखी

भैया कृष्ण ! भेजती हूँ मैं
राखी अपनी, यह लो आज।
कई बार जिसको भेजा है
सजा-सजाकर नूतन साज॥

लो आओ, भुजदण्ड उठाओ
इस राखी में बँध जाओ।
भरत-भूमि की रजभूमी को
एक बार फिर दिखलाओ॥

वीर चरित्र राजपूतों का
पढ़ती हूँ मैं राजस्थान।
पढ़ते-पढ़ते आँखों में
छा जाता राखी का आख्यान॥

मैंने पढ़ा, शत्रुओं को भी
जब-जब राखी भिजवायी।
रक्षा करने दौड़ पड़ा वह
राखी-बन्द-शत्रु-भाई॥

किन्तु देखना है, यह मेरी
राखी क्या दिखलाती है ।
क्या निस्तेज कलाई पर ही
बँधकर यह रह जाती है ॥

देखो भैया, भेज रही हूँ
तुमको—तुमको राखी आज ।
साखी राजस्थान बनाकर
रख लेना राखी की लाज ॥

हाथ काँपता, हृदय धड़कता
है मेरी भारी आवाज़ ।
अब भी चौंक-चौंक उठता है
जलियों का वह गोलन्दाज़ ॥

बहिनें कई सिसकती हैं हा!
सिसक न उनकी मिट पायी।
लाज गँवायी, गाली पाई
तिस पर गोली भी खायी॥

डर है कहीं न मार्शल-ला का
फिर से पड़ जावे घेरा।
ऐसे समय द्रौपदी-जैसा
कृष्ण! सहारा है तेरा॥

बोलो, सोच-समझकर बोलो,
क्या राखी बँधवाओगे?
भीर पड़ेगी, क्या तुम रक्षा—
करने दौड़े आओगे?

यदि हाँ तो यह लो मेरी
इस राखी को स्वीकार करो।
आकर भैया, बहिन 'सुभद्रा'—
के कष्टों का भार हरो॥

विजयादशमी

विजये ! तूने तो देखा है,
वह विजयी श्रीराम सखी !
धर्म-भीरु सात्विक निश्छल मन
वह करुणा का धाम सखी !!

वनवासी असहाय और फिर
हुआ विधाता वाम सखी !
हरी गयी सहचरी जानकी
वह व्याकुल घनश्याम सखी !!

कैसे जीत सका रावण को
वह तो था सम्राट सखी !
रक्षक राक्षस सैन्य सबल था
सहती सिन्धु विराट सखी !!

गगन-समान [illegible] भी थे
नहीं रहा तब राज सखी !
मातृजनों के हित पर ही
करो पूर्ति [illegible] सखी !!

हो असहाय भटकते फिरते
वनवासी-से आज सखी !
सीता-लक्ष्मी हरी किसी ने
गयी हमारी लाज सखी !!

रामचन्द्र की विजय - कथा का
भेद बता आदर्श सखी !
पराधीनता से छूटे यह
प्यारा भारतवर्ष सखी !!

सबल पुरुष यदि भीरु बनें तो
हमको दे वरदान सखी !
अबलाएँ उठ पड़ें, देश में—
करें युद्ध घमसान सखी !!

पापों के गढ़ टूट पड़ें औ
रहना तुम तैयार सखी !
विजये ! हम-तुम मिल कर लेंगी
अपनी माँ का प्यार सखी !!

मातृ-मन्दिर में

वीणा बज-सी उठी, खुल गये नेत्र
और कुछ आया ध्यान।
मुड़ने की थी देर, दिख पड़ा
उत्सव का प्यारा सामान॥

जिनको तुतला-तुतला करके
शुरू किया था पहली बार।
जिस प्यारी भाषा में हमको
प्राप्त हुआ है माँ का प्यार॥

उस हिन्दू जन की गरीविनी
हिन्दी प्यारी हिन्दी का।
प्यारे भारतवर्ष - कृष्ण की
उस प्यारी कालिन्दी का॥

है उसका ही समारोह यह
उसका ही उत्सव प्यारा।
मैं आश्चर्य - भरी आँखों से
देख रही हूँ यह सारा॥

जिस प्रकार कङ्गाल - बालिका
अपनी माँ धनहीना को।
टुकड़ों की मुहताज आजतक
दुखिनी को उस दीना को॥

सुन्दर वस्त्राभूषण - सज्जित
देख चकित हो जाती है।
सच है या केवल सपना है
कहती है, रुक जाती है॥

पर सुन्दर लगती है, इच्छा—
यह होती है कर लें प्यार।
प्यारे चरणों पर बलि जावें
कर लें मन भर के मनुहार॥

इच्छा प्रबल हुई, माता के
पास दौड़कर जाती है।
वस्त्रों को सँवारती उसको
आभूषण पहनाती है॥

उसी भाँति आश्चर्य मोदमय
आज मुझे दिखलाता है।
मन में उमड़ा हुआ भाव बस
मुँह तक आ रुक जाता है॥

प्रेमोन्मत्ता होकर तेरे पास
दौड़ आती हूँ मैं।
तुझे सजाने या सँवारने
मैं ही खुद सजती हूँ मैं॥

तेरी इस महानता में
क्या होगा मूल्य सजाने का ?
तेरी भव्य मूर्ति को नक़ली
आभूषण पहनाने का ?

किन्तु क्या हुआ माता ! मैं भी
तो हूँ तेरी ही सन्तान।
इसमें ही सन्तोष मुझे है
इसमें ही आनन्द महान॥

मुझ-सी एक-एक की बन तू
तीस कोटि की आज हुई।
हुई महान, सभी भाषाओं—
की तू ही सरताज हुई॥

मेरे लिए बड़े गौरव की
और गर्व की है यह बात।
तेरे ही द्वारा होवेगा
भारत में स्वातन्त्र्य - प्रभात॥

असहयोग पर मर - मिट जाना
यह जीवन तेरा होगा।
हम होंगे स्वाधीन, विश्व का
वैभव, धन तेरा होगा॥

जगती के वीरों द्वारा
शुभ पद-वन्दन तेरा होगा।
देवों के पुष्पों द्वारा
जय अभिनन्दन तेरा होगा॥

तू होगी आधार, देश की
पार्लमेण्ट बन जाने में।
तू होगी सुख-सार, देश के
उजड़े क्षेत्र बसाने में॥

तू होगी व्यापार, देश के
बिछुड़े हृदय मिलाने में।
तू होगी अधिकार, देशभर—
की स्वतन्त्रता दिलाने में॥

तेरी इस महानता में
क्या होगा मूल्य सजाने का ?
तेरी भव्य मूर्ति को नक़ली
आभूषण पहनाने का ?

किन्तु क्या हुआ माता ! मैं भी
तो हूँ तेरी ही सन्तान।
इसमें ही सन्तोष मुझे है
इसमें ही आनन्द महान॥

मुग्ध-सी एक-एक की बन तू
तीस कोटि की आज हुई।
हुई महान, सभी भाषाओं—
की तू ही सरताज हुई॥

मेरे लिए बड़े गौरव की
और गर्व की है यह बात।
तेरे ही द्वारा होवेगा
भारत में स्वातन्त्र्य - प्रभात॥

मातृ-मन्दिर में

असहयोग पर मर-मिट जाना
यह जीवन तेरा होगा।
हम होंगे स्वाधीन, विश्व का
वैभव, धन तेरा होगा॥

जगती के वीरों द्वारा
शुभ पदवन्दन तेरा होगा।
देवों के पुष्पों द्वारा
अब अभिनन्दन तेरा होगा॥

तू होगी आधार, देश की
पार्लमेण्ट बन जाने में।
तू होगी सुख-सार, देश के
उजड़े क्षेत्र बसाने में॥

तू होगी व्यवहार, देश के
बिछुड़े हृदय मिलाने में।
तू होगी अधिकार, देशभर—
को स्वातन्त्र्य दिलाने में॥

उसे भी आती होगी याद ?
उसे ? हाँ, आती होगी याद।
नहीं रूठूँगी मैं, लो, आज
सुनाऊँगी उसको फ़रयाद ॥

कलेजा माँ का, मैं सन्तान,
करेगी दोषों पर अभिमान।
मातृ-वेदी पर घण्टा बजा,
चढ़ा दो मुझको हे भगवान् !!
सुनूँगी माता की आवाज़,
रहूँगी मरने को तैयार।
कभी भी उस वेदी पर देव !
न होने दूँगी अत्याचार ॥

न होने दूँगी अत्याचार
चलो, मैं हो जाऊँ बलिदान।
मातृ-मन्दिर में हुई पुकार
चढ़ा दो मुझको हे भगवान !!

मातृ-मन्दिर में

देव ! ये फूलों [illegible] थालीं,
और यह कोकिल कण्ठ ही लायी ।
यहाँ दूसरे लाखों पास
किन्तु मैं कलियाँ कुछ ही लायी ॥

किन्तु मैं [illegible]
[illegible] किया ।
मातृ-मन्दिर में मुझे [illegible]
[illegible] ॥

आह की कठिन लूह चल रही
नाश का घन-गर्जन हो रहा।
बूँद या वाण बरसने लगे
पापियों से तर्जन हो रहा॥

अमर-लोचन के धन को लिए
चलो, चल पड़ें, खुले हैं द्वार।
गर्जी का शुक्लाम्बर ले चलें
मातृ-मन्दिर में हुई पुकार॥

जननि के दुख की घड़ियाँ कटें
सजावें पूजा का साहित्य।
आरती उतरे आदर भरी
करों में लें नभ का आदित्य॥

आज वे सन्देशे सुन पड़ें
कटें पद-कञ्जों की जञ्जीर।
मुक्ति की मतवाली माँ उठे
उठावे बेटी - बेटे वीर॥

मातृ-मन्दिर में

'पाप पृथ्वी पर से उठ जाय
पापियों से टूटें सम्बन्ध।
प्यार, प्रतिभा, प्राणों की उठे
त्यागमय जीवन-मन्द-सुगन्ध॥

'विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र
पाप से असहयोग लें ठान।
गुँजा डालें स्वराज्य की तान
और सब हो जावें बलिदान॥

उरा से लेखनियाँ उठ पड़ें
मातृ-भू की गौरव से मढ़ें।
करोड़ों मानिनियों की मूर्ति
पलों में निर्भयता से गढ़ें॥

हमारी प्रतिमा प्यारी बढ़े
देश के चरणों पर ही चढ़े।
[illegible] के भावों से [illegible]
[illegible] [illegible] कीर्ति चढ़े॥

झण्डे की इज़्ज़त में

धन्य हुई मैं आज, धन्य है
सखि सौभाग्य हमारा।
जिसकी थी इच्छुका, मिला है
मुझे समय वह प्यारा॥

माँ की वेदी पर बलि होने-
का शुभ अवसर आया।
जन्म सफल हो गया, आज ही
मैंने सब कुछ पाया॥

विदा माँगती हूँ मैं सब से
लो, देखो, हूँ जाती।
क़ौमी झण्डे की इज़्ज़त में
हूँ यह शीश चढ़ाती॥

मेरी टेक

निर्धन हों धनवान, परिश्रम उनका धन हो।
निर्बल हों बलवान, सत्यमय उनका मन हो॥
हों स्वाधीन गुलाम, हृदय में अपनापन हो।
इसी आनपर कर्मवीर, मेरा जीवन हो॥

मां, [illegible] की [illegible]
[illegible] मैं [illegible]।
[illegible]
[illegible]॥

विदाई

कृष्ण-मन्दिर में प्यारे बन्धु
पधारो निर्भयता के साथ ।
तुम्हारे मस्तक पर हो सदा
कृष्ण का वह शुभचिन्तक हाथ ॥

विदाई

तुम्हारी दृढ़ता से जग पड़े
देश का सोया हुआ समाज।
तुम्हारी भव्य मूर्ति से मिले,
शक्ति वह विकट त्याग की आज॥

तुम्हारी धुन की घड़ियाँ बनें
दिलाने वाली हमें स्वराज।
हमारे हृदय बनें बलवान
तुम्हारी त्यागमूर्ति से आज॥
तुम्हारे देशबन्धु यदि कभी
डरें, कायर हो पीछे हटें।
बन्धु! दो बहिनों को वरदान
युद्ध में वे निर्भय मर मिटें।

हमारे हृदय लिये हैं लो,
इन्हें अर्पण ही कर एक।
बहे धीमी प्रतिज्ञा के संग,
न छोड़ना तुम स्वराज्य की टेक॥

विदा

"गिरफ़्तार होने वाले हैं,
आता है वारन्ट अभी।"
धक-सा हुआ हृदय, मैं सहमी
हुए विकल साशङ्क सभी॥

किन्तु सामने दीख पड़े
मुस्कुरा रहे थे खड़े-खड़े।
रुके नहीं, आँखों से आँसू
सहसा टपके बड़े-बड़े॥

"कलकी, यों ही दूर करोगी
माता का यह रौरव कष्ट?"
रुका वेग भावों का, दीखा
अहा! मुझे यह गौरव स्पष्ट॥

तिलक, लाजपत, श्रीगांधी जी
गिरफ्तार बहु बार हुए।
जेल गये, जनता ने पूजा,
संकट में अवतार हुए॥

देव! हमारे आन्दोलन के
प्यारे पावन जन्म-स्थान।
तुमसे सदा रहेगा [illegible]
कुरुक्षेत्र-सम यह हिन्दुस्तान॥

मैं प्रफुल्ल हो उठी कि आहा !
आज गिरफ़्तारी होगी।
फिर जी धड़का, क्या भैया की
सचमुच तैयारी होगी !!

आँसू छलके, याद आ गयी,
राजपूत की वह बाला।
जिसने विदा किया भाई को
देकर तिलक और भाला॥

सदियों सोयी हुई वीरता
जागी, मैं भी वीर बनी।
जाओ भैया, विदा तुम्हें
करती हूँ मैं गम्भीर बनी॥

याद भूल जाना मेरी
उस आँसू वाली मुद्रा की।
कीजे यह स्वीकार वधाई
छोटी वहिन 'सुभद्रा' की॥

स्वागत

तेरे स्वागत को उत्सुक यह खड़ा हुआ है मध्य-प्रदेश ।
अर्घ्यदान दे रही नर्मदा दीपक स्वयं बना दिनेश ॥

विन्ध्याचल अगवानी पर है
वन-श्री चँवर डुलाती है !
भोली-भाली जनता तेरा
झटपट स्वागत गाती है ॥

आ मैया कांग्रेस ! हमारी आकांक्षा की प्यारी मूर्ति !
राज्यहीन राजाओं के मन दीवार की स्वाभाविक पूर्ति !!

है स्वागत की स्फूर्ति यद्यपि
माँ ! मन में होता है कुछ क्षोभ ।
आदेशों में प्रदर्शन-सा है,
है प्रमाद और सङ्कोच ॥

हमें नहीं भय सङ्गीनों का, चमक रहीं जो उनके हाथ।
जरा नहीं डर उन तोपों का, गरज रहीं जो बल के साथ॥

ढीठ सिपाही की हथकड़ियाँ
दमन नीति के वे क़ानून।
डरा नहीं सकते हैं हमको
यदपि बहावें प्रतिदिन ख़ून॥

हम हिंसा का भाव त्याग कर विजयी, वीर, अशोक बने।
काम करेंगे वही कि जिससे लोक और परलोक बने॥

किन्तु आज स्वागत की धुन में
हमें नहीं कुछ भी परवाह।
तुमको पाकर दीन-हीन भी
निज को समझ रहा नरनाह॥

है इतना उत्साह कि डर है, हम उन्मत्त न बन जावें।
है इतना विश्वास कि भय है, हम गर्विष्ठ न कहलावें॥

इतना बल है प्रबल कहीं हम, अत्याचार न कर डालें ।
यही सोच, संकोच यहीं, मर्यादा पार न कर डालें ॥

अतः विनय है शान्ति सहित माँ !
हमको मार्ग सुझा देना ।
भड़की हुई हृदय की ज्वाला
माँ ! कर प्यार बुझा देना ॥

टूटे हुए दीनों की आशा, तू प्राणों की उज्ज्वल बल ।
भारतीय स्वातन्त्र्य प्राप्ति की तू चिरजीवी साधिक बल ॥

मरे हुए की अमर कहानी—
वालों तू सञ्जीवन मन्त्र ।
प्रिय स्वराज्य-सम्पादन का है
एक मात्र तू जीवित मन्त्र ॥

[illegible], बंगाली, हिन्दी, [illegible], [illegible] ।
[illegible], मराठे, सिक्ख-[illegible] [illegible] ।

गरदन कटी हमारी रण में
पड़ा हमारा ही हथियार।
पर मालिक बन गये और ही
दिया दासता का उपहार॥

ऐसे समय सहारा तेरा है बच्चों की यही पुकार।
कर ये दूर धाक धमकी के नौकरशाही के अधिकार॥

वायु बहे स्वच्छन्द भारती,
भारत का फूले उद्यान।
नव वसन्त के साथ भारती
देखे भारत का उत्थान॥

आयी हो वरदायिनि! आओ, आओ-आओ बारम्बार।
त्रुटियों की कुटिया प्रस्तुत है और तुम्हारा है अधिकार॥

इस कुटिया को महल समझना
हम हैं बालक अज्ञानी।
पूजा को तैयार खड़े हैं,
स्वागत! आओ महरानी!!

स्वागत-गीत

कर्म के योगी, शक्ति-प्रयोगी,
देश - भविष्य सुधारेंगे।
हाँ, वीर-वेश के, धीर-वेश के,
जीवन - प्राण पधारेंगे॥

तुम्हारा [illegible] पढ़ाने को [illegible] दौर हुआ।
तुम्हारी वाणी से दिल में हमारे जोर हुआ॥
तुम्हें सुनाने को तुम्हारा [illegible] हुआ।
तुम्हारे नाम का हर ओर [illegible] शोर हुआ॥

हाँ, पर उपकारी, राष्ट्र-विहारी,
कर्म का मर्म सिखाइयेगा ॥

तुम्हारे बच्चों को कष्टों में आज याद हुई ।
तुम्हारे आने से पूरी सभी मुराद हुई ॥
ग़ुलामख़ानों में राष्ट्रीयता आबाद हुई ।
मादरे हिन्द यों बोली कि मैं आज़ाद हुई ॥

हाँ, दीन के भ्राता, सङ्कट त्राता,
जी की जलन बुझाइयेगा ॥

राष्ट्र ने कहा कि महायुद्ध का नियोग करो ।
कँपा दो विश्व को, अब शक्ति का प्रयोग करो ॥
हटा दो दुश्मनों को, डट के असहयोग करो ।
स्वतन्त्र माता को करके स्वराज्य भोग करो ॥

हाँ, हिंसा - हारी, शस्त्र - प्रहारी,
रार की रीति सिखाइयेगा ॥

स्वदेश के प्रति

आ, स्वतन्त्र प्यारे स्वदेश, आ,
स्वागत करती हूँ तेरा।
तुझे देख कर आज हो रहा
दूना प्रमुदित मन मेरा॥

आ, उस बालक के समान
जो है गुरुता का अधिकारी।
आ, उस युवक-वीर-सा जिसको
विपदाएँ ही हैं प्यारी॥

आ, उस सेवक के समान तू
विनय-शील अनुगामी-सा।
अथवा आ तू युद्ध-क्षेत्र में
कीर्ति-ध्वजा का स्वामी-सा॥

आशा की सूखी लतिकाएँ
तुझको पा, फिर लहराईं।
मुझे अत्याचारों की कृतियाँ
हैं निर्भय दरसाती॥

मत जाओ !

यों असहाय छोड़कर असमय
कैसे जाते हो भगवान ?
लौटो, तुम्हें न जाने देंगे,
दुखी देश के जीवन - प्राण !

भारत मैया की नैया के
चतुर खेवैया लौट चलो।
इस कुसमय में साथ न छोड़ो,
रुक जाओ, ठहरो, सुन लो ॥

आशा - वेलि स्वदेश-भूमि की
यों न हाय ! मुरझाने दो।
लौटो, लौटो, भारत के धन !
उसे ज़रा हरियाने दो ॥

जननि निछावर होगी तुमपर
जनता वलि - वलि जावेगी।
श्रद्धा और प्रीति से तुमको
नयनों में विठलावेगी ॥

मत जाओ

लौटो, आओ, मतवाले मैं
मन्दिर एक बना देंगे।
जहाँ हथकड़ी और बेड़ियों—
का घण्टा टँगवा देंगे॥

तुम बन जाना प्रमुख पुजारी
करके माला निज उद्धार।
हम सब मिलकर करें प्रार्थना
हो स्वतन्त्र का मन्त्रोच्चार॥

जब भक्तजना देखी देखी
प्रमुदित हो लेना वरदान।
वह पहिनी [illegible] गले में
भारत के बनना तुम भगवान॥

भारत का हो राजतिलक, तुम
फिर यहाँ से मत जाओ।
[illegible] हो! तुम क्या
कहीं नहीं, हा! मत जाओ॥

विस्मृत की स्मृति

उधर गो-भक्त कहाता देश
इधर ये लाखों गायें कटें।
उधर करतीं वैतरणी पार
इधर वे हाय ! छुरी से छटें॥

उधर मचता है हाहाकार
इधर ये क़दम न पीछे हटें।
देखकर ये उलटे व्यवहार
हमारे हृदय शोक से फटें॥

उधर तुम कहलाते गोपाल
इधर ये गौएँ दिन-दिन कटें।
कहो, तुमही कह दो गोपाल
तुम्हें अब कौन नाम से रटें?॥

बचाने को तुमने गो-वंश
उठाया था गोवर्धन हाथ।
किन्तु अब गोवध होता देख
क्यों नहीं आते हो तुम नाथ?॥

निष्ठुर की स्मृति

मनाते जन्म-दिवस हो मेरे
कृष्ण ! तुम बोलो आये कहाँ ?
व्यर्थ क्यों धोखा देकर गये
कि "आऊँगा मैं फिर भी यहाँ ॥"

हुआ जब घर में बालक जात !
समझने लगे कि आये कृष्ण ।
बधाये गाये लेकर नाम
तुम्हारा दर्शन किया सतृष्ण ॥

बनी कुछ मेहमानी [illegible]
बनाया बालक को नँदलाल ।
बना घर-आँगन गोकुल ब्रज
हुआ परिजन का हृदय निहाल ॥

किन्तु तुम कैसे [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible] ही [illegible] ।
नहीं [illegible] का कुछ [illegible]
कृष्ण, [illegible] के [illegible] ॥

छले जाते हैं यद्यपि नित्य
किन्तु हम करते हैं विश्वास।
एक दिन आओगे तुम कृष्ण
दुष्ट-दल का करने को नाश॥

अभी भी यहाँ बहुत से कंस
मचाते हैं नित अत्याचार॥
नष्ट होता प्यारा गोवंश
बढ़ा जाता पृथ्वी का भार॥

तुम्हारे स्वागत के हित बने—
हुए हैं अब भी कारागार।
घटायें नभ में काली घिरीं
बरसतीं देखो मूसलधार॥

अँधेरा छाया है यह घना
जन्म का प्रस्तुत है सामान।
यही है कृष्ण, जन्म का समय
वचन पूरा कर दो भगवान॥

परिशिष्ट

शब्दार्थ

फूल के प्रति

गुमान = अभिमान, गर्व। सुमन = फूल। कुंज = लतागृह। सम्मान = आदर। मधुप = भौंरा। अपमान = निरादर। शूल = काँटे, कष्ट।

मुरझाया फूल

स्वयं = अपने हाथ। [illegible] = [illegible]। गुञ्जें = आवें। [illegible] = [illegible], [illegible]।

पूजा-आराधना

आराधना = पूजा। साधना = तपस्या। नेम-नियम। [illegible] = [illegible]। पधारें = आवें। [illegible] = धन्यवाद। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]।

[illegible]

[illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। मान-अभिमान।

[illegible]

[illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible], [illegible] [illegible]

= गूँजना । पुरस्कार = इनाम । कोरा = केवल, सिर्फ़ । न्यूनता = कमी ।

चिन्ता

पथ = रास्ता । मचलना = अड़ जाना । कठिन = मुश्किल । मार्ग = रास्ता । मञ्जिलें = पड़ाव । तरंग = लहर । व्रत-भंग = प्रतिज्ञा तोड़ना । निकट = नज़दीक ।

प्रियतम से

परीक्षा = इम्तिहान । रूखा = कठोर । व्यवहार = बर्ताव ।

मानिनि राधे !

आदर्श = लक्ष्य । साधे = साधना की । वृषभानु-किशोरी = वृषभानु की लड़की । भाव-गगन = कल्पना का आकाश । चकोरी = एक पक्षिणी, जो टकटकी लगाकर चन्द्रमा को सारी रात देखा करती है । अलियाँ = सखियाँ । माधव = श्रीकृष्ण । मधुकर = भौंरा । गुञ्जें = गूँज । नख-शिख = सिर से पैर तक । भाता = अच्छा लगता । अविचल = न डिगनेवाली । सौभाग्य = अच्छी किस्मत । विलासी = लिप्त होना, डूब जाना । गुण-गण = तारीफें । नयन = आँखें । मृदु = कोमल । न्यौछावर = चढ़ाना, उत्सर्ग करना । तुच्छ = मामूली । लेखा = समझा । शीतल = ठण्ढा । आदर्श = दृष्टान्त, कहानी । भाव = विचार, समझ ।

आहत की अभिलाषा

लेखा = समझा । अर्पण = सौंपना । इष्ट = अनुकूल । न्यारे = अलग । सुहृद = मित्र । घनेरा = बहुत । दूजा

= दूसरा । विकल = व्याकुल । पटल = पट, परदा । साम्राज्य = अधिकार । सौम्य = सुन्दर । अंगीकार = स्वीकृत । निःस्वार्थ = स्वार्थ-रहित । चेरी = दासी । अधिकार = प्रताप । ठौर = जगह । चाह = आकांक्षा, इच्छा । चाहे = इच्छा हो ।

जल-समाधि

कृपाण = छुरी । निर्दयता = निष्ठुरता । कातरता = विकलता । गौरव = अभिमान । चितेरे = चित्रकार । निकट = पास । अनुसार = तरह । शिला = चट्टान । हलकोर = लहरी । उत्कण्ठा = उत्सुकता । तृष्णा = लालसा । परिहृत-तन = मृतक शरीरवाला । ध्रुव = चकोर । वेदना = वेदना । दीन = गरीब । प्रभात = सबेरा । मछली = सुनहली मछली । विकल = व्याकुल हुई । मन्द = थोड़ी ।

देश तथा वन्दन

[illegible] = निरत । [illegible] = किसी किसी [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = आँखों के आँसू । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible], [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] का [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] की [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] का [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] ।

बालिका का परिचय

शाही = राजसी । दीप-शिखा = दीपक की लौ । घनी-घटा = घने बादल । ऊषा = प्रातः-सूर्य की किरणें । कमल-भृङ्ग = कमल में बन्द भौंरा । सुधाधार = अमृत की धारा । ज्योति = प्रकाश । नयन = आँख । मनस्वी = मन को वश में रखनेवाला । क्रीड़ापूर्ण = खेल-कूद से भरी हुई । वाटिका = फुलवारी । नाटिका = नाटक, दृश्य । मोद = खुशी । क्षमाशीलता = माफ़ कर देनेवाला । जिनवर = जैनों में श्रेष्ठ ।

इसका रोना

सुहाता = अच्छा लगता । छवि = शोभा । मुक्तावली = मोती की लड़ । दृष्टि = देखना, आँख । आत्मीय = अपनापन । बहुधा = अक्सर । चीख़ = चिल्लाहट । निर्भर = अवलम्बित । क्रिया = काम ।

झाँसी की रानी

सिंहासन = राज्य । भृकुटी = भौंह । गुमी = खोयी । आज़ादी = स्वतन्त्रता । क़ीमत = मूल्य, दाम । बुन्देले = बुन्देलखण्ड वासी । हरबोलों = चारण, भाट । मर्दानी = मर्दों के समान, वीर । मुँहबोली = मुँहलगी, ढीठ । पुलकित = प्रसन्न । व्यूह = सेना सजाने का तरीक़ा । सैन्य = फ़ौज । आराध्य = पूजनीय । वैभव = धन-सम्पत्ति । सगाई = व्याह । सुभट = वीर । विरुदावली = कीर्ति-गाथा । चित्रा = अर्जुन की स्त्री । मुदित = प्रसन्न । कालगति = समय का संयोग । विधि = विधाता, ब्रह्मा । डलहौज़ी = भारतवर्ष का तत्कालीन गवर्नर जनरल । लावारिस =

जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। दिवानी = दुश्मनी। अनुनय-विनय = प्रार्थना। विकट = भयानक। माया = माल। बुन = बिना। वैराग = त्याग [illegible]। [illegible] = झूले गोद में। [illegible] गहने। [illegible] [illegible], [illegible]। [illegible] [illegible] हुआ, [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = दुलारा। [illegible] = उड़ जाती हुई। [illegible] = [illegible]। [illegible] = बलिदान। [illegible] [illegible] अंग्रेज़ी सेना का एक सेनाध्यक्ष। [illegible] = लड़ाई। [illegible] = जो बराबरी के न हों। [illegible] = बराबर। [illegible] [illegible] = अंग्रेज़ी सेना का एक सेनापति। [illegible] = अंग्रेज़ी सेना का एक सेनापति। [illegible] = [illegible]। [illegible] = मृत्यु। दिव्य [illegible], सुन्दर। तेज = कान्ति, ज्योति। मनुज = मनुष्य। [illegible] = जिसका नाश न हो सके। [illegible] = अभिमान से भरी। [illegible] = [illegible]। [illegible] न मिटने वाली।

[illegible] की चुनौती

[illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible] [illegible] वाली। [illegible] = [illegible]। [illegible] = आई। [illegible] = [illegible] वाली। [illegible] = [illegible] [illegible]। [illegible] = [illegible] [illegible] का एक [illegible], जब कभी [illegible] [illegible] में (मुसल-मानों [illegible] के) [illegible] से [illegible] [illegible] और [illegible] पर और कोई [illegible] न रह जाय, तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थी। [illegible] [illegible]

व्रत कहते हैं। कसाला = कष्ट। प्रण = प्रतिज्ञा, निश्चय। चुनौती = ललकार।

मेरी कविता

तत्काल = उसी समय। जालियाँ वाला = पञ्जाब का प्रसिद्ध शहीदी बाग़, जहाँ जनरल डायर ने निहत्थी जनता पर गोलियाँ चलायीं थीं। फ़ायर = गोली चलाना। यथा = जैसा। मग्न = डूबा हुआ। केशपाश = बालों का समूह। शून्य-दृष्टि = सूनी आँखें। खिन्नमना = उदास। भाल = ललाट। क्लेश = दुःख। रम्य = सुन्दर, रमणीय। क्रम-क्रम = धीरे-धीरे।

राखी

नूतन = नया। भुजदण्ड = हाथ। आख्यान = कहानी। राखी-बन्द- = राखी से बँधा हुआ। निस्तेज = बेदम, मुर्दा। साखी = साक्षी, गवाह। जलियाँ का गोलन्दाज़ = मशहूर गोली चलाने वाला डायर। अङ्कित = लिखा हुआ। मार्शल-ला = फ़ौज़ी क़ानून।

विजयादशमी

धर्मभीरु = धर्म से डरनेवाला। सात्विक = शुद्ध। निश्छल = छल रहित। करुणा का धाम = दूसरे के दुख से दुखी होने वाला। असहाय = जिसकी सहायता करने वाला कोई न हो। विधाता = ब्रह्मा, ईश्वर। वाम = वाँया, विरुद्ध। सहचरी = पत्नी। सम्राट = बाद-शाह। रक्षक = रक्षा करने वाला। राक्षस-सैन्य = राक्षसों की सेना। सबल = बलवान। प्रहरी = पहरे-दार। सिन्धु = समुद्र। विराट = बड़ा भारी। फ़क़ीरी =

विलासियों का-सा । पराधीनता = गुलामी । भीरु = कायर । स्वत्वार्थ = लिये । गमस्थान = श्मशान ।

मातृ-मन्दिर में

नेत्र = आँख । ध्यान = याद । उन्मत्त = उन्मत्ता । कालिन्दी = यमुना । समाधि = ध्यानस्थ । धर्माचरण = मङ्गल-कामना । अनुराग = आदर । आंदोलन = दुनिया में लगी । भिक्षादाता = भीख देना । प्रेमोन्मत्ता = प्रेम में पागल । महानता = बड़प्पन । अक्ष = सर्वोत्तम, सुन्दर । कल्याण = दया । महान = बड़ा । मधुमास = [illegible] । [illegible]-प्रकाश = आशाओं का संदेश । जननी = दुनिया । पद-वन्दन = पैरों की पूजा । अभिनन्दन = स्वागत, स्वागत । पादसिंचन = [illegible] करने वाली रचना । दान = भेंट, संतान ।

मातृ-मन्दिर में

व्यथित = दुखी । पद-पद्म = पैर रूपी कमल । मातृ-मन्दिर = माता का मन्दिर । दीन = ग़रीब । [illegible] = दुखें । दुर्बल = न उठने योग्य । मार्ग = रास्ता । ग्रीष्म = गर्मी । गात = शरीर । [illegible] = [illegible] शरीर । प्रसाद = किसी आशीष ।

मातृ-मन्दिर में

[illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible], [illegible], [illegible] ।

झण्डे की इज़्ज़त में

इच्छुका = अभिलाषिणी । क़ौमी = राष्ट्रीय । शीश
सिर ।

मेरी टेक

आन = टेक । अन्धेर = अन्याय ।

विदाई

पधारो = जाओ । शुभचिन्तक = भला चाहने वा

विदा

रौरव = नारकीय । गौरव = आदर । स्पष्ट = सा
पावन = पवित्र । प्रफुल्ल = प्रसन्न । मुद्रा = चेष्टा, आ

स्वागत

उत्सुक = उत्कण्ठित । अर्घ्य = अञ्जलि । दिवसे
सूर्य । वन-श्री = वनकी शोभा । हिंसा = मार
नरनाह = राजा । उन्मत्त = पागल । गर्विष्ठ =
अत्याचार = अन्याय । मर्यादा = सीमा । चिरजी
बहुत दिनों तक जीने वाली । सात्विक = प
उद्यान = बगीचा । त्रुटियों = ग़लतियाँ ।

स्वागत-गीत

भविष्य = आने वाला समय । मर्म = अ
मतलब । मुराद = इच्छाएँ । आबाद होना =

भिखारियों का-सा। पराधीनता = गुलामी। भीरु = कायर। चपलाएँ = बिजलियाँ। घमसान = भयानक।

मातृ-मन्दिर में

नेत्र = आँख। ध्यान = याद। उत्सव = जलसा। कालिन्दी = यमुना। समारोह = धूमधाम। वस्त्राभूषण = गहना-कपड़ा। मनुहार = आदर। मोदमय = खुशी से भरी। झिड़कना = डाँट देना। प्रेमोन्मत्ता = प्रेम में पागल। महानता = बड़प्पन। भव्य = अलौकिक, सुन्दर। सन्तान = बच्चा। महान = बड़ा। सरताज = सिरमौर। स्वातन्त्र्य-प्रभात = आज़ादी का सवेरा। अवनी = दुनिया। पद-वन्दन = पैरों की पूजा। अभिनन्दन = सलामी, स्वागत। पार्लमेण्ट = क़ानून बनाने वाली सभा। रोग = रोग, बीमारी।

मातृ-मन्दिर में

व्यथित = दुखी। पद-पंकज = पैर रूपी कमल। मातृ-मन्दिर = माता का मन्दिर। दीन = गरीब। [illegible] = [illegible]। दुर्गम = न जाने योग्य। मार्ग = रास्ता। सोपान = सीढ़ी। पाथ = पाला। कलगान = सुन्दर गान। फ़रियाद = विनती प्रार्थना।

मातृ-मन्दिर में

[illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible] आवाज़। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]। [illegible] = [illegible]।